हिंदी पत्रिका

त्रिकुटा

आत्मदीपः भव

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

Indian Institute of Management Jammu

सम्पादकीय समिति (भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू)

डॉ. अनुजा अखौरी, सहायक प्रोफेसर

डॉ. बिजॉय रक्षित, सहायक प्रोफेसर

शालिन एस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

आशीष कु. ईशर , एलडीसी

संकलन समिति

मानव, घृतिपोल, गौरव, साहिल, खुशबू, शुभम, संपदन, वेदिका, मोहित, हर्षित, मेघना, स्वाथी, वंशिका, मुस्कान, निकिथा, आदर्श, समृद्धि, राहुल, यशीता, मुशाहीद, ईशा, उन्नत, अंजलि, अंशुल, गुंजन, इशिता, प्रीति, राज, रश्मि, सौम्या, वर्षिता, यशी।

प्रतिलिप्यधिकार

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेटोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित

पुस्तक : पत्रिका

© भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

संस्करण: द्वितीय

वर्ष: 2023

प्रकाशक: भारतीय प्रबन्धन संस्थान जम्मू

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रकः

सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि. बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29,

ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700091

सम्पादकीय

त्रिकुटा
"आत्मदीप: भव"

प्रिय पाठकों

हमारे संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'त्रिकुटा' की दूसरी संस्करण को प्रस्तु करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

त्रिकुटा पर्वत भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और पीर पंजाल रेंज से शिवालिक पहाड़ियों तक फैला हुआ है। कैलाश (6,697 मीटर), शिवलिंग (6,590 मीटर), और मेरु (6,481 मीटर) त्रिकुटा पर्वत की तीन प्रमुख चोटियाँ हैं। पहाड़ ग्लेशियरों का घर हैं, जिसमें मंदाकिनी नदी के स्रोत चोराबारी ग्लेशियर शामिल हैं। त्रिकुटा ब्रह्मा के घर महा मेरु (मेरु पर्वत) के आसपास के बीस पहाड़ों में से एक है। पहाड़ को दिव्य देवी दुर्गा का दसरा घर माना जाता है। वह बुराई को समाप्त करने के लिए तीन देवियों की शक्ति से बनाई गई थी; इसलिए पर्वत को त्रिकुटा कहा जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू परिसर त्रिकुटा पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। त्रिकुटा पहाड़ों की ऊंचाई भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने की ओर सदैव अग्रसर है।

हम अपने संस्थान के निदेशक प्रो. (डा.) बी. एस. सहाय जी को सहृदय धन्यवाद देते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का दूसरा अंक अभिरूपित हो पाया है। साथ ही हम उन सभी को सविनय आभार व्यक्त करते है जिन्होंने कविता, लेख, कहानी तथा चित्र द्वारा अपने विचारों को पत्रिका के दूसरे संस्करण में साझा किया है।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन में हमनें सतर्कता बरती है, फिर भी अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो हमें खेद है। आपसे अनुरोध है की पत्रिका को और बेहतर बना सके इसके लिए आप अपने सुझाव पाठक और आलोचक, दोनों प्रारूप में हमसे साझा करें (hindipatrika@iimj.ac.in)।

साधुवाद ।

सम्पादकीय समिति

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	3
अन्वेश (लेख)	4
◆ **जम्मू और कश्मीर के उत्थान के लिए -** *प्रो. बी. एस. सहाय, निदेशक*	4
◆ **जम्मू: शांति और एकता की भूमि -** *आशीष ईशर, एल. डी. सी.*	6
◆ **दो एकड़ जमीन -** *लक्ष्मीनारायण जाबड़ोलिया, पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)*	8
◆ **जिंदगी और गीतो के रंग पंचम के संग -** *शालीन यस नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	11
◆ **संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति की निरीक्षण बैठक की झलकियां**	13
◆ **भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति की निरीक्षण बैठक**	14
◆ **आईआईएम जम्मू में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया**	15
विचार धारा (कविताएँ)	17
◆ **रामायण -** *अनामिका प्रकाश, इ एम बी ए (प्रथम वर्ष)*	17
◆ **सैनिक का प्रेम पत्र...। -** *लक्ष्मीनारायण जाबड़ोलिया, पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)*	18
◆ **युद्ध और बचपन -** *मनोज कुमार ठाकुर, इ. एम. बी. ए. कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड मैनेजमेंट (प्रथम वर्ष)*	18
◆ **बापू ने सोचा था -** *अनन्त श्रीवास्तव, पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)*	20
◆ **अंधेरों से घबराना क्या -** *डॉ प्रतीक माहेश्वरी, सहायक प्रोफेसर*	20
◆ **दफ्तर से घर लौटती स्त्री -** *डॉ अनुजा अखौरी, सहायक प्रोफेसर*	21
◆ **प्रकृति की अलख, सौंदर्य से सजीव -** *अभय कुमार अवस्थी, राजभाषा अधिकारी*	21
◆ **ढूंढता जिसे है वो तेरे अंदर कहीं -** *शालीन. यस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	22
◆ **आवाज -** *आकृति गौतम, एम. बी. ए. (प्रथम वर्ष)*	23
◆ **राह से साहिल तक -** *शालीन यस नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	23

प्रो. बी. एस. सहाय
निदेशक

निदेशक का संदेश

नमस्कार मित्रों!

"त्रिकुटा" के दूसरे अंक के साथ, हम खुद को एक बार फिर एक समृद्ध साहित्यिक यात्रा पर पाते हैं, जहां रचनात्मकता की हर विविधता अपने जीवंत रंगों को प्रकट करती है। मैं, आपके साथ, इस अद्वितीय प्रयास को प्रस्तुत करने में गर्व महसूस करता हूं जो हमारे समुदाय की विविध प्रतिभाओं और दृष्टिकोणों का उत्सव मनाता है।

"त्रिकुटा" पत्रिका एक मजबूत मंच के रूप में कार्य करती है जहां छात्र, कर्मचारी और संकाय विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने के लिए एक साथ आते हैं - चाहे वह कविता, लेखन, कला, फोटोग्राफी, पहेलियां आदि हों। यह पत्रिका हिंदी भाषा में रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

हिंदी भाषा, एक सांस्कृतिक आधारशिला, सदियों से विकसित हुई है, न केवल संचार के साधन के रूप में, बल्कि हमारे विचारों और भावनाओं की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में। आज जब हम माननीय प्रधानमंत्री के "विकसित भारत @ 2047" के दृष्टिकोण के साथ खुद को जोड़ते हैं, तो "त्रिकुटा" इस यात्रा का एक अभिन्न अंग बन जाता है, जो हमें हिंदी के माध्यम से हमारी विरासत की समृद्धि को गले लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इस व्यापक समर्थन में, मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू प्रतिवर्ष हिंदी पकवाड़ा मनाता है, हिंदी भाषा के उपयोग और महत्व को बढ़ाने के लिए हिंदी वाद-विवाद, गायन और कविता जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करता है। जैसा कि हम "त्रिकुटा" के दूसरे अंक की शुरुआत कर रहे हैं, न केवल साहित्यिक गतिविधियों में बल्कि आधिकारिक और प्रशासनिक प्रयासों में भी हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारे संस्थान की प्रतिबद्धता को देखना खुशी की बात है।

संक्षेप में, आपका कौशल और हिंदी भाषा के साथ जुड़ाव इस पत्रिका की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। "त्रिकुटा" के माध्यम से, हम सामूहिक रूप से एक गतिशील और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के योगदान के महत्व को पहचानते हैं।

आप सभी को "त्रिकुटा" के साथ एक प्रबुद्ध यात्रा की शुभकामनाएं!

जय हिंद! जय हिंदी!

अन्वेश (लेख)

जम्मू और कश्मीर के उत्थान के लिए बदलाव करने वाले प्रेरक: आईआईएम, आईआईटी और एम्स की एक संयोजना

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसे प्रमुख संस्थान जम्मू और कश्मीर के विकास में गहरा और बहुमुखी प्रभाव डाल सकते हैं। चलिए देखें कि यह शैक्षिक त्रयी कैसे सामाजिक-आर्थिक उत्थान में योगदान कर सकती है: मानव पूंजी के विकास: ये संस्थान देश और विश्व भर से प्रतिभाशाली छात्रों, संगठनों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करेंगे। विभिन्न क्षेत्रों- प्रबंधन, इंजीनियरिंग और स्वास्थ्य सेवा में एक उच्च कुशल कार्यबल का नेतृत्व करने वाले इन संस्थानों की यह बुद्धिमत्ता आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी। साथ ही, ये संस्थान विभिन्न शासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के कौशल को विकसित करने के लिए डिज़ाइन किए गए विभिन्न कार्यक्रम भी चला रहे हैं।

अर्थव्यवस्था के विविधीकरण: एक आईआईएम, एक आईआईटी और एक एम्स की उपस्थिति स्थानीय अर्थव्यवस्था में विविधता लाएगी। इन संस्थानों के स्नातक और पेशेवर क्षेत्रों के विकास में यह योगदान कर सकते हैं जैसे कि प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और प्रबंधन परामर्श। इसके परिणामस्वरूप, यह विविधीकरण इस क्षेत्र में अर्थिक उतार- चढ़ाव को और व्यापार पर्यावरण को सुचारू बना सकता है।

नवाचार और अनुसंधान: आईआईटी-जम्मू खुबी से अत्याधुनिक अनुसंधान और नवाचार में योगदान करेगा, जबकिएम्स स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी ऐसा ही करेगा। आईआईएम जम्मू द्वारा स्थापित बिजनेस इनक्यूबेशन सेंटर उभरते स्टार्टअप के लिए बाजार में प्रतिस्पर्धा और जीवित रहने में मदद करेगा। इन संस्थानों के रिसर्च फंडिंग, उद्योगों के साथ साझेदारियां और सहयोगी परियोजनाएं भी आकर्षित करेंगे। यह अनुसंधान और नवाचार व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को सुधारेगा और तकनीकी प्रगति करेगा जो अन्य क्षेत्रों को भी लाभान्वित कर सकती हैं। आईआईएम जम्मू और आईआईटी जम्मू यहां के साथ-साथ देश में नवाचार और अनुसंधान क्षेत्र को बढ़ावा देंगे जबकि उनके एकीकृत कार्यक्रम B.Tech + एमबीए इस क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण होंगे।

स्वास्थ्यक्षेत्रीय इंफ्रास्ट्रक्चर: एम्स की उपस्थिति स्वास्थ्यक्षेत्रीय इंफ्रास्ट्रक्चर के मूल ढांचे को काफी विकसित करेगी। इससे विकसित होगा चिकित्सा देखभाल, चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जनसंख्या के स्वास्थ्य चुनौतियों वाले क्षेत्र में। स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि करेगा जो निवासियों के जीवनशैली में सम्पूर्णता क बढ़ाएगी। एमबीए (हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन एंड हेल्थकेयर मैनेजमेंट) की प्रारंभिक शिक्षा के साथ, इससे निश्चित रूप से भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र की प्रबंधन क्षमता का विकास होगा।

उद्यमिता और आरंभिक संगठन: आईआईटी, आईआईएम और एम्स संस्थान में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा मिलता है। स्नातकों को अपने उद्यमों की शुरुआत करने और स्थानीय समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। स्टार्टअप के विकास से क्षेत्र की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार रोजगार का सृजन, आर्थिक विकास और समस्या के समाधान हो सकते हैं।

मूल ढांचे का विकास: ये प्रतिष्ठित संस्थान आमतौर पर शिक्षा, आवास, परिवहन और उपयोगिताओं के संदर्भ मे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के विकास के लिए स्थापित हुए हैं। इससे छात्रों और समुदाय की जीवनस्तर में सुधार होगा, साथ ही स्थानीय समुदाय के लिए रोजगार की सुविधा उपलब्ध होगी।

नेटवर्किंग और सहयोग: ये संस्थान नेटवर्किंग और सहयोग के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगे। छात्र, संगठन और शोधकर्ता स्थानीय व्यापारियों, सरकारी निकायों और सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग करेंगे। इस प्रकार की सहयोग से साझेदारी, सामुदायिक पहल और साझा ज्ञान संभव होगा, जो क्षेत्र को लाभान्वित करेगा।

नेतृत्व और प्रशासन: ये संस्थान स्नातकों को आमतौर पर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में नेतृत्व स्थानों के लिए तैयार करते हैं। इससे वे बेहतर नेतृत्व स्किल्स प्राप्त करेंगे और शासन, सार्वजनिक नीति और क्षेत्रीय संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

क्षेत्रीय विकास के लिए एक असाधारण अवसर का प्रतिनिधित्व करते हुए, एम्स-जम्मू, आईआईएम-जम्मू और आईआईटी-जम्मू की त्रयी प्रतिभा को आकर्षित करेगी, नवाचार को बढ़ावा देगी, अर्थव्यवस्था में विविधता लाएगी और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को बढ़ाएगी। शिक्षा और अनुसंधान के इन पावरहाउस के बीच अंतर्संबंध सामाजिक और आर्थिक समृद्धि और एक उज्जवल भविष्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह जम्मू और कश्मीर के उत्थान के लिए एक आशाजनक दृष्टि है और शिक्षा और अनुसंधान की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है।

प्रो. बी. एस. सहाय
निदेशक

जम्मू: शांति और एकता की भूमि

हिमालय के आलिंगन में बसा, जम्मू शहर एक जीवित कैनवास के रूप में उभरता है जहां इतिहास, आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सुंदरता एक मनोरम कृति में एकजुट होती है। जैसा कि आप इस मोहक क्षेत्र में कदम रखते हैं, एक ऐसी यात्रा शुरू करने के लिए तैयार रहें जो समय को पार करती है और आपको सांस्कृतिक ऐश्वर्य के दिल में ले जाती है। प्राचीन मंदिरों से लेकर महलों तक जो भक्ति की कहानियों को गुनगुनाते हैं, जो शाही भव्यता के गवाह के रूप में खड़े हैं। इस लेख में, हम जम्मू के कालातीत आकर्षण को जानेंगे।

दिव्य भूमि:

जम्मू जिले का नाम जम्मू शहर से लिया गया है जो राज्य की शीतकालीन राजधानी होने के अलावा, मंदिरों के शहर के रूप में जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि शहर मूल रूप से राजा जंबू लोचन द्वारा स्थापित किया गया था जो चौदहवीं शताब्दी ईसा पूर्व में रहते थे। राजा एक दिन शिकार के लिए बाहर गए थे, जब उसने एक बाघ और एक बकरी को एक ही तालाब से पानी पीते हुए देखा। राजा जम्बू लोचन इस असाधारण दृश्य से चकित रह गए। उन्होंने अपने मंत्रियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने समझाया कि इसका मतलब है कि जम्मू की यह भूमि विशेष और दिव्य है, और यहां किसी की भी एक-दूसरे के प्रति दुश्मनी नहीं है। यह एकता और सद्भाव का स्थान है।

इस घटना ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया और उन्होंने इस स्थल पर एक शहर बनाने का फैसला किया ताकि मजबूत और कमजोर लोग शांति और आपसी सहिष्णुता में एक साथ रह सकें। आखिरकार, उन्होंने शहर की स्थापना की जिसे उनके नाम के बाद "जंबू" के नाम से जाना जाने लगा। समय बीतने के साथ नाम का उच्चारण थोड़ा विकृत हो गया और शहर, 'जम्मू' के नाम से जाना जाने लगा ।

वास्तुकला वैभव:

वास्तुकला चमत्कार जो जम्मू के क्षितिज को परिभाषित करते हैं। महा काली के मंदिर, जिसे बहू माता के नाम से भी जाना जाता है, की भव्यता से लेकर प्राचीन महलों के जटिल डिजाइनों तक, प्रत्येक संरचना कलात्मक प्रतिभा की कहानी बताती है। जब आप जम्मू शहर में घूमते हैं, वास्तुशिल्प चमत्कार आपको एक ऐसे युग में ले जाते हैं जहां शिल्प कौशल को एक कला के रूप में उन्नत किया गया था।

सांस्कृतिक मिश्रण:

जम्मू की संस्कृति की समृद्ध विरासत में खुद को डुबो दें। शहर के त्योहार, जीवंत बाजार और पारंपरिक शिल्प अनुभवों का एक बहुरूपक प्रदान करते हैं। चाहे आप रघुनाथ बाजार के माध्यम से घूम रहे हों या नवरात्रि महोत्सव के उत्साह को देख रहे हों, जम्मू उन परंपराओं के उत्सव के रूप में सामने आता है जो जो हमारी समृद्ध विरासत और संस्कृति को प्रदर्शित करता है।

दिव्य शांति के लिए प्रवेश द्वार:

जम्मू, जिसे अक्सर "मंदिरों का शहर" कहा जाता है, दिव्य शांति के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। वैष्णो देवी जैसे पवित्र स्थलों की यात्रा शुरू करते ही हवा आध्यात्मिकता से भर जाती है। शहर की धार्मिक विविधता, जहां मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे सामंजस्यपूर्ण रूप से सह-अस्तित्व में हैं, विविधता में एकता की एक अनूठी झलक दिखाते हैं।

प्राकृतिक वैभव:

शहर के सांस्कृतिक खजाने से परे इसके प्राकृतिक परिदृश्य की लुभावनी सुंदरता निहित है। पहाड़ियों से घिरा हुआ, जम्मू हिमालय पर्वतमाला के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। तवी नदी, शहर के मध्यम से बहती है और हलचल भरी सड़कों में शांति का स्पर्श जोड़ती है।

कदे आओ साडे जम्मू!

आशीष ईशर
एल. डी. सी.

दो एकड़ जमीन

चरमर करती खटिया पर बाहर बैठा बीमार पन्ना लाल ने आवाज लगाई:- श्यामू, ओ! श्यामू , शायद उसको कुछ जरूरत थी, लेकिन श्यामू की पत्नी रुकमा ने एक दो बार नज़र अंदाज़ कर फिर बोला। क्यों हमारा सिर खा रहा है। जा ! अपने छोटे बेटे के पास जा, क्या तुम्हारे पालने का ठेका ले रखा है, सुबह ही रोटी खिलाई थी और अब भूख भी लग गई। हमको दिया ही क्या है, जो हम तुम्हारे को रोटी खिलाये , सारा धन तो उसको दे दिया। छोटे बेटे का नाम रामु था । हां जी, असल में उनका नाम रामलाल व श्यामलाल था लेकिन गांवों में नाम बिगाड़कर, छोटाकर बोलने की प्रथा है अतः सब उनको रामू व श्यामू या बड़े बूढ़े रामुडया , श्यामूडया कहकर पुकारते थे। दरअसल श्यामू बहुत दिनों से अलग रह रहा था ,और पन्ना लाल, पत्नी सहित अपने छोटे बेटे रामु के साथ रहता था, लेकिन एक ही मकान जो की पन्ना लाल का था , में अलग अलग कमरों में रहते थे अतः कभी कभार जब रामू घर से जल्दी खेत पर चला जाता तो सिकुड़ती हाड़मांस का पुतला पन्ना लाल श्यामू के पास गर्म रोटी मांग लिया करता था लेकिन आज फिर हर बार की तरह उसकी आत्मा सूख कर रह गयी जब श्यामू की पत्नी रुकमा ने रोटी के बजाय दुत्कार दिया।माता पिता अपनी औलादों को अपना पेट काटकर लालण पोषण करे , लेकिन उन्ही बेटों के पास उन माता पिता के लिए रोटियां कम पड़ जाती है। आजकल यही विधि का विधान होता चल जा रहा है ।

जवानी में पन्ना ने खूब मेहनत मज़दूरी कर के अपने पास कुछ जमीन जायजाद जोड़ी थी । कुछेक भाग करीब एक साथ व कुछेक अगल अलग जगहों पर । आज रामू व श्यामू के पास जो भी है उसी की जमीन जायजाद है । श्यामू शादी होते ही अलग हो गया था और मज़दूरी कर के अपना गुजरा चलाया करता था। रामु श्यामू से बहुत छोटा था और देखा जा सकता है कि माता पिता अक्सर छोटे पुत्र के पास ही रहते है। पहले जमीन ऐसे ही शाब्दिक तौर पर ही बाँट लिया करते थे, रजिस्ट्री वैगराह बाद में होती रहती थी। सहकारी खेती के बारे आपने सुना होगा, आज भी लोगों की जमीन इदर उदर फसीं रहती है। रामू श्यामू ने भी कुछ ऐसे ही जमीन बाँट ली थी, रामू अपने पिताजी पन्ना के साथ बचपन से ही मज़दूरी या खेती के काम में ही लगा रहता था। करीब सत्तर अस्सी के दशक में सरकार द्वारा गरीब किसानो को, साहूकारी प्रथा से निवारण के लिए, भूमि अधिग्रहण नियम के तहत , कुछ जमीन के टुकड़े उनके नाम (अलॉटमेंट) किये थे ताकि उनका गुजारा चल सके। श्यामू अलग रहने लग गया था अतः उसके अलग जमीन अलॉटमेंट हुई और रामु के न होकर उसके पिताजी धन्ना लाल के नाम अलग से जमीन अलॉटमेंट हुई। जमीन क्या थी, बल्कि दो एकड़ जमीन का एक अंजड़ टुकड़ा था । वो लम्बे लम्बे कूंचे, कंटीली झाड़ियां, रेत के ऊँचे ऊँचे धोरे, जिनको देखकर खेती तो दूर, जंगली जानवर , भूत प्रेत आदि से डर के मारे रूह कांपती थी। इसलिए पहले लोग खेती करना कम ही पसंद थे, मज़दूरी ज्यादा अच्छी थी लेकिन रामु ने खेती करना चाहा । न कुआ, न बावड़ी, न पानी का अन्य स्रोत, ऐसे में केवल मौसमी खेती ही कर सकते थे लेकिन उसके पहले जमीन को समतल बनाने के लिए अपना सब कुछ दाव पर लगाना पड़ सकता था। रामु ने भी साहूकार से ब्याजपर पैसे लेकर जमीन को समतल बनाकर कुछ भाग पर कैसे तैसे खेती शुरू की और धीरे धीरे अपना पेट पालने लगा। साहूकार के ब्याज का नाम सुनकर ही आत्मा सिहर उठती है, क़र्ज़ चुकाने में पीढ़ियां लग जाती है , और शायद छोटे किसानों की आजतक भी हालात इसी वजह से खराब है । रामू ने कैसे-तैसे जमीन को समतल करके मौसमी खेती करना शुरू किया, उसके पिताजी भी काम में हाथ बटाया करते थे । मौसमी खेती से पार नहीं पड़ती देखकर रामू ने खुद की जमीन के टुकड़े में कुआ बनाया। छोटा-मोटा मेहनत मजदूरी भी कर लिया करता था जिसके भी घर का खर्च चल सके। धीरे-धीरे वक्त गुजरता गया खेत में खड़ी फसलों को देख कर के श्यामू के मन में काला कपट पैदा हो गया वह सोचने लगा कि यह खेत तो आधे मेरे हैं। इस कुए में भी मेरा हिस्सा है, अब रोज का झगड़ा शुरू हो गया, आये दिन श्यामू दारू पीकर, रामू के खेत पर आकर कभी जमीन मांगता, कभी कुआ। श्यामू के मुँह से हमेशा यही कहते सुना जा सकता था , " रामूडया तेरे को बर्बाद करके छोड़ूंगा, तेरी आने वाली पीढ़ी को बर्बाद कर दूंगा । रोज-रोज के झगड़े से परेशान होकर रामू ने अपनी छोटी सी कुटिया एक खेत में ही बना दी थी ताकि अधिकतर समय खेत में ही गुजर सके। श्यामू फिर भी उसका पीछा नहीं छोड़ता था लड़ाई के लिए खेत में ही आ धमकता था कभी कभार तो खून खराबा भी हो जाता था चूँकि रामू तो छोटा भाई था, बड़ा भाई पिता समान होता है, श्यामू पर हाथ नहीं उठा सकता था , इसी का फायदा श्यामू उठा लेता था, और बिच बचाव में अगर उनके पिताजी आते तो, श्यामू पिताजी को भी पीटने से नहीं चूकता था।

एक दिन हार के वो दिन आ ही गया, उस दिन बंटवारे का दिन था, सुबह सवेरे तड़के ही रामू ने पिता जी पन्नालाल को नहला धुला कर टूटी सी खटिया पर बैठा दिया। पंच पटेल आने वाले ही थे आजकल के पंच कैसे होते हैं वह बताने की जरूरत नही है, कहने को तो पंच परमेश्वर होते हैं लेकिन वास्तविकता कुछ और ही होती हैं पहले ही मामले सेट हो जाते हैं कई पंचों को दारू की बोतल में बिकते देखा जा सकता है । आस-पड़ोस रिश्तेदारों में कई पंच पटेल आए। जैसा कि कोई जीमण का कार्यक्रम हो, रामू के खेत में ही हुआ करता था, इससे श्यामू को फायदा ये होता था कि उसके घर का रोटी पानी का खर्चा बच जाया करता था, दूसरी तरफ खेत में खुली जगह मिल जाती थी, लेकिन रामू को इससे कोई ग्लानि नहीं होती थी, अतः इस बार भी पंच पटेल खेत में ही जमा हुए हैं, बड़ी बड़ी मूंछे व सफ़ेद धोती कुर्ता पहने मानो बगुले लग रहे थे। जाजम बिछाई गई। भैंस के दूध की मलाई मार के उबलती चाय , पानी , गरमा गरम रोटियां सब्ज़ी व अन्य खाना पीना सब रामु के घर से ही आ रहा था। बेचारा पन्नालाल खटिया पर बैठा बैठा सब देख रहा था वह एक फटी सी बंडी (जेब वाली बनियान) पहना हुआ था। पन्नालाल को ऐसा लग रहा था कि बटवारा जमीन का नहीं उसके शरीर का होने वाला है आजकल के पटेल होते ही ऐसे हैं, वह केवल दोनों पक्षों को कैसे-तैसे करके निपटारा करवाना चाहते हैं, सही क्या है गलत क्या है वह मायने नहीं रखता है। कमजोर व गरीब पक्ष को ही हमेशा दबाया जाता है। कभी रामू को पूछे, तो कभी श्यामू को पूछे, लेकिन जिसकी जमीन है उसको कोई पूछ ही नही रहा था। न्याय का सिद्धांत तो ये कहता है कि जिसकी जमीन है उसकी सहमति अति आवश्यक है लेकिन पंच पटेल तो परमेश्वर ठहरे। जमीन का आपस में बंटवारा हुआ एकजाई जमीन थी वह रामू को दे दी गई क्योंकि रामू ने उसी जमीन के पास कुआ बना लिया था और खेती करना शुरू कर दिया था और जो अन्य टुकड़े थे जो कि मुख्य सड़क पर स्थित थे व कीमती भी थे, वह श्यामू को दे दी गई । बूढ़े माता पिता को तो बेशक रामू के पास ही रखना था । अब रहा पुश्तैनी मकान जिसमे पन्नालाल रामू के साथ व श्यामू भी अलग अलग कमरों में रहा करता थे, वह श्यामू के हिस्से में दे दिया गया। जैसे ही मकान का बंटवारा हुआ पन्नालाल छाती फाड़कर रोने लगा जैसे कि उसके खुद के टुकड़े हो गए हो आज पन्नालाल आँसू भरी आंखों से देख रहा था कि जिस मकान में उसने भाग भाग कर के पत्थर लगाए थे, जिस मकान को उसने अपनी से सींचा हो, जिस मकान की हर ईंट में उसकी आत्मा बसती हो, उसी मकान में उसे रहने के लिए एक कमरा भी नहीं दिया गया है। वो पंच पटेलों के फ़ैसलों से कतई सहमत नही था। वैसे तो सहमत श्यामू भी नही था उसको तो कुँए वाली आधी जमीन चाहिए ताकि कुआ में भी हिस्से की मांग पुरी हो जाये जबकि कुआ तो रामु ने बनवाया था। रामु भी खुश नहीं था क्यों कि कीमती जमीन व मकान तो श्यामू को दे दिया जा रहा था । कैसा फैसला था कोई खुश नहीं था, लेकिन पंच पटेल अपने मूंछों पर ताव दे रहे थे मानो उनकी जीत हुई हो । दोनों भाइयों में झगड़ा नही हो अतः चुपचाप इस दर्द को पन्नालाल ने अपने सीने में लगाये रखा और कुछ वर्ष बाद ही चल बसा। पटेलों के समझाने पर रामू ने तो जो भी फैसला सुनाया गया उसको अपनी किस्मत समझकर स्वीकार कर लिया था । लेकिन श्यामू करीब 10-12 साल तक रामू से यही कहता रहता था कि उसको कुछ नहीं दिया । उसका मन कुए वाली जमीन में अटका हुआ था जो कि रामु की खुद की थी । रामू भी हमेशा यही कहता रहता था कि, कभी भी दुबारा जैसा वो चाहे वैसा फैसला कर ले लेकिन लड़ाई झगडे को ख़त्म कर दे। समय बीतता गया रामू ने फिर साहूकार से कर्ज लेकर खुद की जमीन गिरवी रखकर पक्का 1-2 कमरे खेत मे ही बना लिया। हालांकि पक्के मकान की हैसियत नही थी लेकिन वो कुदरत व भगवान की परीक्षाओं से मजबूर था जो कि उसने

पिछले कुछ सालों में कच्चे झोपड़ी में झेली थी। एक बार तो सब कुछ आग में स्वाहा हो गया था। दुबारा ऐसी ही कच्ची झोपड़ी में अपने दूध पीते बच्चों को लेकर रहने की उसकी हिम्मत नही बन पा रही थी। धीरे- धीरे मेहनत के खेत खलियान देख कर के रामू कभी कभार खुश हो लिया करता था कि अब जीवन मे शांति मिल जाएगी लेकिन उसकी खुशी हमेशा कुछ ही पल की रहती, फसल काटने के तुरंत बाद ही साहूकार का मोटा तगड़ा आदमी आकर रास (अनाज का ढेर) पर ही कम दामों में पूरी फसल का मोलतोल कर लेता। बेचारा रामु को खाने का अनाज भी कभी कभार तो साहूकार से ऊंचे दामों में खरीदना पड़ता। लेकिन हरे खेत देखकर श्यामू के मन में अभी भी लालच की ज्वाला उठ रहा थी यह वैसे ही थी जैसा कि महाभारत में पांडवों को इंद्रप्रस्थ देने व इन्द्रप्रस्थ को खुशहाल बनाने के बाद, दुर्योधन के मन में लालच का गुब्बार उठ रहा था। जैसे दुर्योधन पांडवों को पांच गांव भी देने को तैयार नही था वैसे ही श्यामू को भी रामू की खुशहाली देखकर फूटिकोडी भी नहीं सुहाती थी । दोनों भाइयों में लड़ाई अभी भी जारी थी शायद जमीन की नहीं , मन के लालच की थी। जैसे-जैसे जमीनों के भाव बढ़े, ग्रामीण क्षेत्र का शहरीकरण हुआ वैसे वैसे श्यामू ने अपनी जमीन बेचनी चाही, अब श्यामू का मन पंच पटेलों के 20 वर्ष पहले वाले फैसले को बदलना नहीं चाह रहा था लेकिन फिर भी उसका मन उस कुएं वाली जमीन में अटका हुआ था। बिना नामांतरण खोले बिकती नही। लड़ाई झगडे वापस शुरू, आए दिन सुबह शाम श्यामू , अपने बैठों के साथ साथ , छोटे भाई रामू के खेत में आकर रोज मारपीट करता और कभी जमीन मांगता तो कभी कुआ। एक दिन हार थक कर दोनों भाईयों में जमीनें का बंटवारा कानूनी तौर पर हो ही गया। दोनों भाइयों का मनमुटाव देख कर के रामू के पड़ोसियों के भी सींग हो गए , चारों तरफ से आस-पड़ोस रोज 1 -1 हलाई कम करके रामू की जमीन पर अतिक्रमण करना शुरू कर दिया । हर पडोसी से थाना फौजदारी होती रही लेकिन थाने फौज़दारी का हाल तो पंच पटेलों से भी बदतर है। कई पुलिस वालों को अपराधियों के साथ गले मिलते देखा जा सकता है , बाहों में हाथ डाल के चलते फिरते देखा जा सकता है, मामले चलते रहे और रामू कमजोर होता गया। श्यामू को बड़ा मजा आता था छोटे भाई को दुखी देखकर। घर का भेदी लंका ढाये, आस पड़ोसियों को घर से ही रामू की कमजोरियों का पता चल कर वो मज़बूत होते गए। कहा जाता है कि आदमी संसार ले लड़ सकता है लेकिन घर वालों से हार जाता है , रामू का भी यही हाल हो रहा था । आज रामू उसी टूटी हुई चारपाई पर लेटकर यही सोच रहा है कि काश ! ये टुकड़ा जमीन का होता ही नहीं । जो दोनों भाई आपस में मां की गोद में बैठने को भाग कर जाया करते थे , एक ही थाली में खाना खाया करते थे , आज उनके रास्ते ही अलग है। आज करीब करीब हर घर में रामू श्यामू जैसी कहानियां मिल जाएगी । दो एकड़ जमीन के टुकड़े के लिए भाई भाई लड़ रहे है, आस पडोसी लड़ रहे है , सत्ताएं भी लड़ रही है , देश विदेश भी जमीन के टुकड़े के लिए ही लड़ रहे है । क्या जमीन का टुकड़ा इतना कीमती है , क्या इसके बिना भूखे मर जायेंगे , शायद नहीं! तो फिर क्यों लड़ रहे है, क्यों परिवार बिखर रहे है। शायद इसका जवाब आज तक नहीं मिला। (क्रमश: भाग द्वितीय...)।

लक्ष्मीनारायण जाबड़ोलिया
पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)

जिंदगी और गीतो के रंग पंचम के संग

जब एक पिता अपनी बेटी से बालों में तेल लगाने को कहता है और बैकग्राउंड में रेडियो पर 'सर जो तेरा चक्राए...' गाना बजता है। इससे हमें आश्चर्य होता है कि उस प्रतिभाशाली बच्चे के बारे में जिसने 9 साल की उम्र में यह मजेदार गाना बनाया होगा? यह कोई और नहीं बल्कि महान संगीत सम्राट आर.डी.बर्मन (एस. डी.बर्मन और मीरा की इकलौती संतान) हैं, जिनका जन्म 27 जून 1939 को हुआ और उनका पालन-पोषण कोलकाता में हुआ।

पंचम शब्द का संस्कृत में अर्थ पांच होता है। जब अनुभवी भारतीय अभिनेता अशोक कुमार ने नवजात आर.डी. बर्मन को बार-बार 'पा' शब्द का उच्चारण करते देखा, तो उन्होंने लड़के का उपनाम 'पंचम' रख दिया। आशा भोंसले के अनुसार 'पंचम ने जो कुछ भी देखा उससे संगीत तैयार किया और आप कभी नहीं जानते थे कि वह क्या लेकर आएंगे और यह कितना अभिनव होगा।' आशा भोंसले ने अपने दिवंगत पति की याद में 'राहुल एंड आई' नाम से एक एल्बम समर्पित किया है। उनकी मृत्यु के बाद जब उनका बैंक लॉकर खोला गया तो उसमें केवल 5 रुपये थे लेकिन उन्होंने अपने संगीत के माध्यम से अपनी सारी संपत्ति हम पर बरसा दी, यह बिल्कुल अविस्मरणीय है।

उनके टकराव में एक गिलास के खिलाफ एक चम्मच (चुरा लिया है), डेस्क का उपयोग करना (मास्टरजी की आ गई चिट्ठी), एक गुब्बारे के साथ एक बांस की सीटी (अब्दुल्ला) और विभिन्न स्तरों पर पानी से भरी बोतलें (ओ माझी रे) शामिल थीं। उपरोक्त सभी बातें हममें से प्रत्येक को यह महसूस कराती हैं कि उसने ऐसी असामान्य चीजों की कल्पना कैसे की होगी और यह केवल यह दर्शाता है कि आर.डी. वास्तव में एक बहुत ही रचनात्मक व्यक्ति थे।

अपना पहला फिल्मफेयर पुरस्कार पाने से पहले उन्हें लगातार 12 वर्षों तक नामांकित किया गया था। मप्र सरकार. उन्हें लता मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया। लेकिन दुखद बात यह थी कि संगीत के क्षेत्र में इतने दिग्गज होने के बावजूद, उन्हें कभी भी प्रतिष्ठित "दादा साहेब फाल्के पुरस्कार" से सम्मानित नहीं किया गया, जो वास्तव में कई लोगों के लिए आश्चर्य की बात है। इतने महान संगीतकार और उनके खाते में केवल तीन फिल्मफेयर पुरस्कार? क्या यह सचमुच अन्याय नहीं है!

उन्होंने 'सांबा' पर एक एल्बम भी बनाया और साथ ही बॉय जॉर्ज के साथ भी काम किया। उन्होंने लैटिन अमेरिकी संगीतकार जोस फ्लोर्स के सहयोग से पीट गावनकर द्वारा निर्मित 'पैनटेरा' नामक एल्बम के लिए संगीत तैयार किया। 2002 में रिलीज हुई फिल्म 'झंकार बीट्स' इस महान प्रतिभा को एक श्रद्धांजलि थी। कॉमेडियन महमूद ने आर.डी. को उनकी पहली फिल्म 'छोटे नवाब' (1961) दी, क्योंकि जैसा कि वह कहते हैं कि वह आर.डी. द्वारा अपनी उंगलियों के लगातार ड्रम बजाने से उनकी कार में सेंध लगने से थक गए थे!

अगर किसी प्रेमी लड़के की प्रेमिका का नाम 'चांद' है तो वह उसे 'चांद मेरा दिल' गाकर संबोधित करेगा, अगर किशोरावस्था में किसी व्यक्ति को अपनी प्रेमिका का सपना आता है तो उसे 'रात कली एक ख्वाब' गाना याद आएगा। अगर कोई लड़का किसी खूबसूरत लड़की को देखता है तो 'एक लड़की को देखा' गाना गुनगुनाने लगता है। पहली नजर के प्यार का वर्णन 'चुरलिया है तुमने जो दिल को' गाने से किया जा सकता है और अगर उसे प्यार हो जाता है तो वह 'क्या यही प्यार है' गाना गाकर अपनी प्रेमिका से सवाल पूछ सकता है। अपने पहले हनीमून पर जोड़े एक-दूसरे की आंखों में देखकर 'आप की कसम' गाएंगे। वाकई रोमांटिक लगता है ना! इंतज़ार! अभी और भी बहुत कुछ आना बाकी है।

अगर कुंवारे लोगों के अलावा पड़ोस में कोई खूबसूरत लड़की रहने आती है तो उसे 'मेरे सामनेवाली खिड़की...एक चांद का टुकड़ा रहता है' जैसी तारीफ जरूर मिलेगी। आर.डी. ने हर स्थिति के लिए गाने बनाये हैं चाहे वह 'याद आ रही हैं' गाना गाकर

किसी को लगातार याद करना हो या फिर अपने प्रेमी के आने से खुश प्रेमिका 'तुम आ गए तो नूर आ गया' गाना गाना हो। एक हृदयविदारक स्थिति को 'तुम बिन जाऊं कहां' गाने के साथ उपयुक्त रूप से जोड़ा जा सकता है। जब पार्टी का समय हो तो 'बच के रहना रे बाबा, आ देखें ज़रा, प्यार में दिल पे, बचना ये हसीनों' जैसे दमदार और ग्रूवी आर.डी. रीमिक्स को कौन भूल सकता है। दोस्ती की भावना सदाबहार 'ये दोस्ती' के बिना अधूरी है। इस प्रकार यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पंचम दा की क्लासिक रचनाएँ आने वाली पीढ़ियों तक संगीत प्रेमियों के दिल और दिमाग में हमेशा बनी रहेंगी। पंचम दा कैबरे से लेकर हिप्पी, रॉक एंड रोल, क्लासिकल से लेकर कव्वाली तक कुछ भी लिख सकते थे। इसका एक ज्वलंत उदाहरण 'मेरे नैना सावन भादो' गीत है जिसमें 'शिवरंजिनी राग' पर आधारित आधुनिक और शास्त्रीय संगीत का मिश्रण है। क्या आपको नहीं लगता कि यह वास्तव में आरडी को प्रदान की गई बहुमुखी प्रतिभा और रेंज के बारे में बहुत कुछ बताता है।

कहा जाता है कि 1986 उनके करियर का सबसे खराब साल था क्योंकि उन्हें कम काम मिलना शुरू हो गया था। जो निर्माता पहले उनके संरक्षक थे, वे अचानक गायब हो गये। इसके साथ ही बप्पी लाहिड़ी की ऊंची वेस्टर्न डिस्को धुनों ने भी आर डी पर

असर डाला। लेकिन इन सब से गुजरने के बावजूद उन्होंने इन वर्षों में कुमार सानू, अमित कुमार, अभिजीत, हरि हरन और परवीन सुल्ताना जैसे कई नए और प्रतिभाशाली गायकों को पेश किया। . गुजरे जमाने की अभिनेत्री रेखा ने अपने गायन की शुरुआत आर डी के निर्देशन में की थी।

आर डी के जीवन के आखिरी साल काफी दुखद थे। जिन कुछ फिल्मों में उन्होंने संगीत दिया, वे बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो गईं। जब उन्होंने 'राम लखन' खो दी तो वह टूट गए और परेशान हो गए, जिसका वादा पहले सुभाष घई ने उनसे किया था, लेकिन बाद में यह जोड़ी लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के पास चली गई, जो कभी आरडी के ऑर्केस्ट्रा का हिस्सा थे। एक गाना जो यहां फिट बैठता है वो है 'क्या हुआ सुभाषजी आपका वादा'. निर्माता-निर्देशक देव आनंद, शक्ति सामंत, रमेश सिप्पी, रमेश बहल, विधु विनोद चोपड़ा, नज़ीर हुसैन और गुलज़ार आरडी के कट्टर वफादार थे। वह अक्सर कहा करते थे कि उन्होंने सपनों में अपनी सर्वश्रेष्ठ धुनें बनाईं और दुखद धुनें बनाते समय भी उन्हें प्रसन्नचित्त रहना पड़ता था। 'जब मैं निराश होता हूं तो चीजों को गड़बड़ कर देता हूं।' 1990 के दशक के मध्य में कोई भी संगीत कंपनी उनके संगीत को लेने के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन विडंबना यह थी कि उसी संगीत ने इतिहास रच दिया। 4 जनवरी 1994 को आशा भोंसले के साथ उनका निधन हो गया। एक तीसरी रचना जो उनके जीवन की यात्रा का प्रभावी ढंग से वर्णन करती है वह है 'नाम गुम जाएगा..... मेरी आवाज ही पहचान है' गाना।

पंचम को याद करते हुए गुलज़ार कहते हैं, 'वो जितने बड़े संगीतकार थे उतने ही बड़े शिल्पकार भी थे'। कहा जाता है कि जब वह ठीक हो रहे थे तब उन्होंने 2,000 से अधिक धुनें बनाई थीं जिन्हें उन्होंने अपने मेमोरी बैंक में रखा था। उनके संगीत की सफलता और उनकी वित्तीय विफलता के बीच के अंतर के बारे में व्यापक चर्चा हुई है। जब आर.डी. के कौशल की सराहना करने की बात आती है तो जितना कहा जाए उतना कम है, उन्हें हिंदी फिल्मों में संगीत में क्रांति लाने का श्रेय दिया जाता है और उनकी शैली और तकनीकों का आज भी संगीतकार अनुसरण करते हैं। प्रेरणाओं और धुनों को उभारने का आरोप होने के बावजूद यह सच है कि उन्होंने ऐसे नंबर दिए जो मूल से भी बेहतर हैं। इसीलिए महान आर.डी.बर्मन को 'फ्यूजन के सम्राट' के नाम से जाना जाता था।

शालीन यस नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति की निरीक्षण बैठक की झलकियां

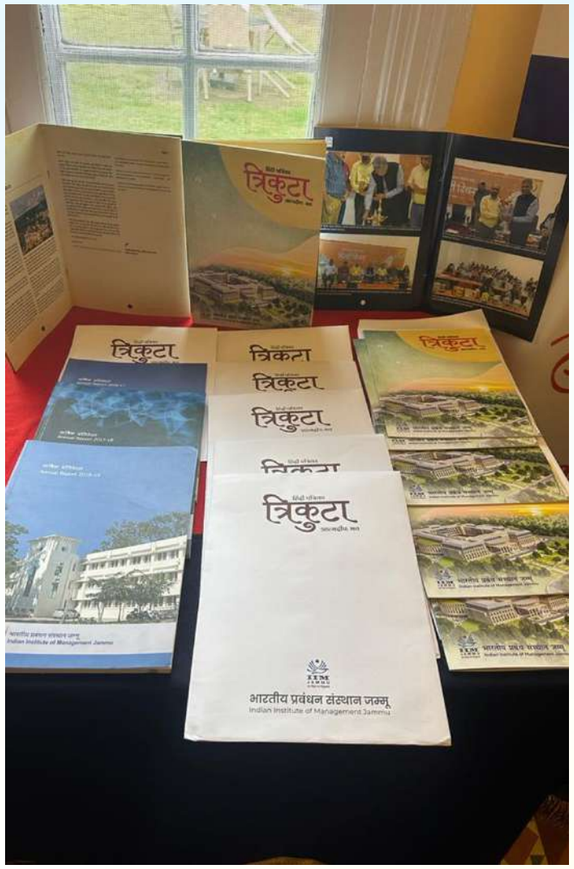

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति की निरीक्षण बैठक

25 सितंबर 2023: सीमा सुरक्षा बल के तत्वाधान में दिनांक 25 सितंबर 2023 को श्रीनगर में संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक के दौरान समिति द्वारा विभिन्न संस्थाओं के साथ-साथ भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू में राजभाषा के कार्यों का निरीक्षण किया।

संस्थान की ओर से निदेशक प्रोफेसर विद्या शंकर सहाय, डॉ मुखबिल बुरहान, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं राजभाषा इंचार्ज डॉ अनुजा अखौरी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कमांडर केशवन भास्करण (रि.), एवं सहायक प्रशासनिक अधिकारी अभय कुमार अवस्थी सम्मिलित हुए। निदेशक महोदय द्वारा पिछले वर्ष में राजभाषा से जुड़े सभी कार्यों की जानकारी संसदीय समिति के समक्ष प्रस्तुत की गई।

इस अवसर पर, संस्थान के निदेशक ने समिति को यह सुनिश्चित कराया कि संस्थान आगामी वर्षों में राजभाषा अधिनियम 1963 के अनुसार सभी प्रशासनिक कार्यों से जुड़े हुए दस्तावेजों को द्विभाषी किए जाएंगे एवं प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का उपयोग अधिक से अधिक किया जाएगा

इस दौरान निदेशक प्रोफेसर सहाय द्वारा राजभाषा समिति के सभी सदस्यों का अंग वस्त्र द्वारा अभिवादन किया और संस्थान की वार्षिक पत्रिका "त्रिकुटा" भेंट की गई। संसदीय उप समिति ने भारतीय प्रबंधन संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन पर संतुष्टि जताई।

आईआईएम जम्मू में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया

27 सितंबर,2023, जम्मू: आईआईएम जम्मू की हिंदी राजभाषा समिति ने परिसर में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि शामिल थी। दैनिक जीवन में इसके उपयोग के बारे में जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ "हिंदी भाषा" के महत्व का जश्न मनाने के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया था।

प्रो. बी.एस. आईआईएम जम्मू के निदेशक सहाय ने कहा, "हिंदी एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश में बोली जा सकती है और छात्रों को भाषा का महत्व सिखाया जाना चाहिए। हमें परिसर में हिंदी पखवाड़ा की मेजबानी करते हुए खुशी हो रही है और छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने कार्यक्रम के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया है। आईआईएम जम्मू में, हम सरकार की राजभाषा नीतियों को लागू करने को उचित महत्व देते हैं। भारत की।"

आईआईएम जम्मू के डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर जाबिर अली ने कहा, "हिंदी एक सार्वभौमिक भाषा है जिसे पूरे देश में बोली जा सकती है और छात्रों को भाषा का महत्व सिखाया जाना चाहिए। मैं इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को बधाई देना चाहता हूं और आग्रह करता हूं संस्थान के सभी संकाय, अधिकारी एवं कर्मचारी अधिक से अधिक कार्य "हिन्दी" में करें तथा भाषा की गरिमा को बनाये रखें।

श। अरुण अग्रवाल, उप. महानिदेशक, दूरसंचार विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार, "मैं एक भाषा के रूप में हिंदी की सरलता, मधुरता और शक्ति पर भी जोर देना चाहूंगा। मैं हमेशा सभी को हिंदी को अपने दैनिक कार्यालय की दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित और अनुशंसा करता हूं। हम सरकार की राजभाषा नीतियों को परिश्रमपूर्वक और सफलतापूर्वक लागू कर रहे हैं। भारत की।"

दूरसंचार विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भारत की ओर से IIM जम्मू के साथ मिलकर "मोबाइल क्रांति का सामाजिक प्रभाव--कारात्मक/नकारात्मक" विषय पर आयोजन किया गया। और संस्थान में छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान अन्य कई कार्यक्रम आयोजित किये गये।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय, अधिकारी, कर्मचारी सदस्य और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आईआईएम जम्मू की छात्र परिषद के सहयोग से हिंदी राजभाषा द्वारा किया गया।

विचार धारा (कविताएँ)

रामायण

सरयू की चमक का कारण चांद नहीं एक नगरी थी,
हर्ष, उल्लास, धन, धान्य से भरी पड़ी एक गगरी थी।
स्वयं ही संपन्न नगर के नाथ दशरथ का गुणगान लिखूं
दया, करुणा, प्रेम, सरलता और कितने बखान लिखूं ।।1।।

नक्शा लिए थी ढूंढ रही दुख की कस्ती सरयू तट को,
सरयू में थे बड़े दलदल जो ले डूबे हर संकट को।
दरिद्रता भी आंखे मूंदे ही सामने से गुजरती थी,
मानो अनभिज्ञ हो की समक्ष अयोध्या की भी नगरी थी ।।2।।

धूल धूल की कण कण में प्रसन्नता ही विराजे थी,
नभ में जो झांको तो खुशियों की चमकती बारातें थी।
वृक्ष के पुष्पों की महक नगर भर को भिगोए थी,
अवध अपनी कोख में कई मुस्कान संजोए थी ।।3।।

पर तीन वक्ष के स्तन आतुर थे नन्ही सी आलिंग्न को,
कमल चरण की प्रतीक्षा थी विराट महल के आंगन को।
वैसे तो अयोध्या में दुख ढूंढे भी न मिलता था,
आखिर घर-घर हर पहर संतोषमयी पुष्प खिलता था ।।4।।

फलते फूलते साम्राज्य के सम्राट सुना है वंचित थे,
नियती के थे अपने खेल, अपने ही मंतव्य अंकित थे।
फिर छोड़ वैभव नाथ का, वो वन में नंगे पांव चले
रघुवंश के भविष्य की चिंता जो अंतर्मन में खले ।।5।।

सबको देने वाला दाता, सम्राट सभी का कहलाता,
एक भिक्षुक का वेश लिए, सन्यासी से मिलने जाता।
भिक्षुक बन तुम्हरे दर आया, मुझको ना तुम सरकार कहो,
तुम जगत नाथ के प्रिय अधिक हो, मेरा भी उद्धार करो ।।6।।

जो छिद्र से घुस आया था, वो दुख भी अब दफन हुआ,
सूर्यवंशो के महल में अद्वित्य एक जश्न हुआ,
उड़ते उड़ते थी खबर आई, दशरथ के पिता बन जाने की,
उन तीन विचलित वक्ष को आलिंगन के मिल जाने की ।।7।।

अवध नाथ के घर सुना है सृष्टि नाथ पधारे थे,
हर दिशा बस नृत्य, धुन, गीत, रंग, नगाड़े थे।
अब रघुनाथ के पोषण का उत्तरदायित्व निभाना था,
सज्ज होने में अवधपुरी को समय तो लग ही जाना था ।।8।।

सरल नहीं जननी बनना, उसकी जिसकी ये सकल सृष्टि,
दो लोक ही जो आंके तो, उसके सम उसकी दो दृष्टी।
जो हथेली पर रखे धरा, उसकी क्रीड़ा को थल चाहीं,
सबको कहां मिलते राम, दशरथ बनने का बल चाहीं ।।9।।

एक संतान की चाह रखे थे, चार कमल खिल आए,
राम, लखन, भरत, शत्रुघ्न हर्षमय दिन लाए।
गुरु वशिष्ठ ने शस्त्र, शास्त्र के ज्ञान-गुण समझाए,
फिर रघुवर को लेने संग विश्वामित्र आए ।।10।।
राम नहीं, मैं संग चलता हूं सेना शस्त्र उठाए,

बालक है ये कैसे लड़ेगा गुरुवर आप बताएं।
भुजाओं में बल कम नहीं, बस हृदय ही निर्बल पाया,
दशरथ ने भावुक होकर था पुत्र प्रेम जताया ॥1॥

गुरुदेव ठहरे त्रिकाल दर्शी, धराधीश की कहां सुने,
सुबाहु, ताड़का, मारीच वध को गुरुवर ने प्रभु राम चुने।
अभी शेष था राम - सिया का संगम मिथिला नगरी में,
चार चांद भी लगने थे राजा जनक की पगड़ी में ॥2॥

फिर तान धनुष- बाण, राम आज्ञा सुन बेझिझक चले,
उनको जाता देख दशरथ मन ही मन सिसक चले।
जो विराजे रहे शेषनाग पे, विष्णु बन लक्ष्मी संग,
लखन कहां छोड़े, नारायण रहे चाहे किसी भी रंग ॥3॥

अब वध होना था एक कुटिल, दुष्ट, भयावह नारी का,
ग्राम भर को लगा भले, पर राम को क्या ही भारी था।
मैं सोचूं कितनी खुशकिस्मत जो राम बाण वो खाए रही,
अंतिम स्वांस में ही ताड़का कितने पुण्य कमाए रही ॥4॥

अनामिका प्रकाश
इ एम बी ए (प्रथम वर्ष)

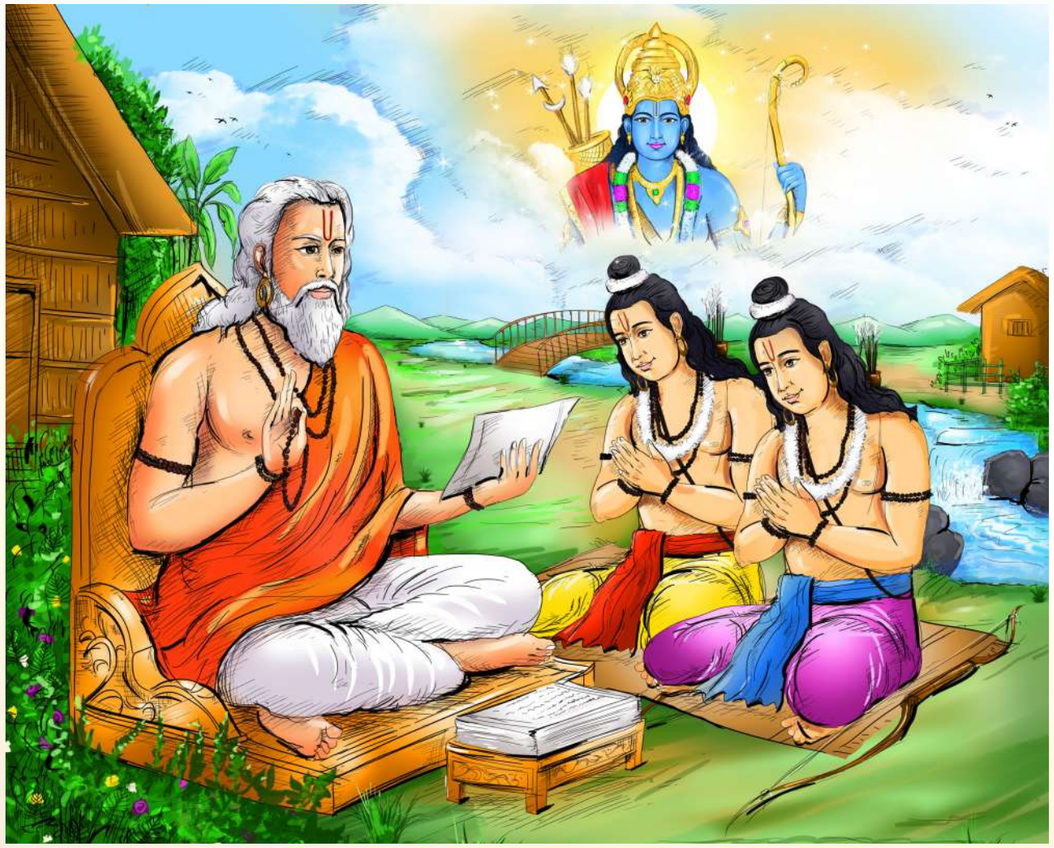

सैनिक का प्रेम पत्र...।

विजय दिवस पर सैनिकों को समर्पित

सुनो प्रिय, दिन ढल जायें गर हमेशा को कभी,
मैं घर लौट न पाऊं गर हमेशा को कभी,
तुम फिर भी मशरिक़ को निगाहें जमाये रखना,
मैं फिर न लिख पाऊं गर ऐसे छन्द कभी।
तुम मेरे गीतों को होटों से लगाए रखना,
गर ख़ामोश हो जाये अल्फ़ाज़ मेरे हमेशा को कभी,
तुम अपने लफ्ज़ो से मेरे छन्द से कड़ी मिलाये रखना,
शायद फिर से न हो भौंर को आसमां अरुणाई कभी,
तुम फिर भी दहलीज़ पर टकटकी लगाए रखना॥
ताबूत में लिपटा मैं आ जाऊं गर तिरंगे में घर कभी,
सीने से लगा तुम्हे प्रिये न कह पाऊं मैं गर कभी,
तुम फिर भी निष्ठुर हृदय बन, सुहाग को सजाये रखना,
वतन की ख़िदमत में शहीद हो जाऊं मैं गर कभी।
ग़मज़दा हृदय हो तुम्हारा, संयम को बनाये रखना,
क़फ़स से आज़ाद हो जाऊं गर हमेशा को कभी,
हे, मेरी संगिनी, अर्धांगिनी, वामांगिनी, अमर रागिनी,
तुम चुनना मातृ प्रेम को, विचारों में हो गर द्वन्द्व कभी,
सरहदे भेज देना नंदन को, शत्रु से हो गर युद्ध कभी॥

लक्ष्मीनारायण जाबड़ोलिया
पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)

युद्ध और बचपन

नभ के चाँद, सितारे अपने,
बागों में खिले फूल हैं अपने।
बादल, धूप, हवा और बारिश,
हरे - भरे सब पेड़ हैं अपने।
सुबह - शाम आसमान में,
उड़ते खग के झुंड हैं अपने।
मम्मी - पापा, दादी - नानी,
चुन्नू - मुन्नू सब दोस्त हैं अपने।

सीधा - सादा सरल होता है,
बचपन बहुत प्यारा होता है।

क्या है कि जब हम बड़े होते हैं,
"अपने - पराए" करने लगते हैं?
और तब तो हद होती है
जब युद्ध और हिंसा होती है।

आइए, आज एक संकल्प लेते हैं
- कि जब भी मन अशांत होता हो,
अपने बचपन को याद कर लेंगे,
और उन सरल यादों से अपने,
विश्व - शांति के देखेंगे सपने।

मनोज कुमार ठाकुर
इ. एम. बी. ए. कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड मैनेजमेंट
(प्रथम वर्ष)

बापू ने सोचा था

बापू ने सोचा था भारत हो अपना कुछ ऐसा
बापू ने सोचा था भारत हो अपना कुछ ऐसा,
न रहे जाति- पात व मिले नारी को पूरी सुरक्षा,
लोकतंत्र में महिलाओं की हो अच्छी भागीदारी,
बना रहे सम्मान उनका, मिले उनको अधिकार भी,
न हो अन्याय यहाँ पर, न ही कोई भेदभाव हो,
जैसी उनकी इच्छा हो वैसा ये संसार मिले,
खुशहाल ज़िंदगी जी सकें वो और दे भागीदारी स्वस्थ समाज में,
बापू ने सोचा था ऐसा।
स्थिति ठीक उलट यहाँ पर,
कम भागीदारी, बलात्कार,हिंसा,
अधिकारों का हनन और न जाने कितना अन्याय,
झेल रही महिलाएँ यहाँ पर,
हर जगह है कायम माहौल भय का,
बिगड़ा हुए माहौल है यहाँ,
कौन लेगा बीड़ा महिला उत्थान का,
कौन सुनिश्चित करेगा उनकी भागीदारी,
कब मुक्त होगी परदों से नारी,
कब तक चलेगी ये दासता की कहानी,
सपने बापू के आखिर कब तक रहेंगे अधूरे,
खैर जवाब अब देना ही पड़ेगा,
उठाना पड़ेगा बीड़ा खुद ही खुद के उत्थान का,
देना पड़ेगा मुहतोड़ जवाब अब हर अत्याचार का,
भरना पड़ेगा दम अब अपने विश्वास का,
लेकर चलना होगा आदर्श बापू के विचार का,
जाकर तक पूरा होगा सपना एक स्वर्णिम विहान का,
बापू ने सोचा था जैसा कि हो भारत अपना कुछ ऐसा ||

अनन्त श्रीवास्तव
पी. एच. डी. (प्रथम वर्ष)

अंधेरों से घबराना क्या

अंधेरों से घबराना क्या, सुबह की पहली किरण है ज्योति बिखेरती,
हमारे विचार ही तो हैं, जो जीवन के पथ को सुनहरा करते।

चल पड़ें उस रास्ते पर, जहाँ ख्वाबों की रौशनी में बस्ते हैं सपने,
जहाँ तारों के नीचे बुने जाते हैं नए आसमानी अपने।

हर कदम पे नई दास्तां, हर पल नई कहानी कहता,
जीवन की इस यात्रा में, हर दिन नया संगीत बहता।

रात की इस चांदनी में, जहाँ हर खामोशी भी गुनगुनाती है,
हर दिल की धड़कन में, उम्मीद की लौ जलती रहती है।

आओ चलें उस जहान में, जहाँ हर सुबह कुछ नया संदेशा लाती है,
जहाँ हर सपना खुद ब खुद, अपनी राह खुद बनाती है।

तो चलो, उठो और बढ़ चलो, इस सफर में नई यादों को बुनो,
इस जीवन की महफिल में, हर पल को अपने रंग में चुनो।

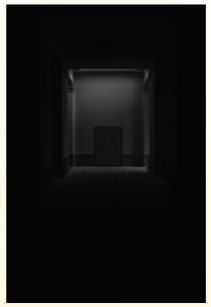

डॉ प्रतीक माहेश्वरी
सहायक प्रोफेसर

दफ्तर से घर लौटती स्त्री

दफ्तर से घर लौटती स्त्री
को नही मिलती घर में
स्वागत की मुस्कुराहट
न सोफे पे बीच की जगह
न टीवी का रिमोट
न एक गिलास पानी ही

उसे मिलती है घर में
उसके इंतजार में बैठी चिंताएं
बचे हुए काम, रोते हुए बच्चे
बिखरा बिस्तर, जूठे बर्तन
सूखे टंगे कपड़े
और स्पेशल खीर बनाने की फरमाइश

दफ्तर से घर लौटती स्त्री
को कभी कभी लगता है
अब वो घर से दफ्तर जा रही है।

डॉ अनुजा अखौरी
सहायक प्रोफेसर

प्रकृति की अलख, सौंदर्य से सजीव

बूंदें गिरीं बरसात की, पृथ्वी ने लिया संजीवनी सा स्वरूप,
प्रकृति की दुल्हन सजी, हर मन को भाए आकाशी रंगीन सौंदर्य रूप।

पहाड़ों की ऊँचाइयों से खेतों की घास खिली,
मातृभूमि का आदर करती, बहती नदियों में रंगी अपनी मील।

वनों में बसी ब्रज कोमलता, बाघों की रौनक में बढ़ती,
पक्षियों की चहक में, फूलों का मिलन रूप सुंदर साथी।

सूर्य की किरणों से सजे, सब कुछ लगता है सुन्दर,
प्रकृति है सृष्टि का राजदूत, जो करती है हमें बहुत ही प्यारी और समर्पित।

वृक्षों की छाया में बैठकर, हरियाली से भरा हृदय,
प्रकृति के साथ लिपटकर, मिलता है सुकून और प्रेम का संबंध।

समुद्रों की लहरों में बसा है, सागर सा अनंतता और गहराई,
प्रकृति की कहानी है अनगिनत, जिसमें है सृष्टि की अनगिनत विशेषाएं और भावनाएं।

प्रकृति की गोदी से निकलती, हर कला की सृष्टि,
मन को भाए प्रेरणा, जीवन में भरती ताजगी और ऊर्जा का बनावटी सौंदर्य।

अभय कुमार अवस्थी
राजभाषा अधिकारी

ढूंढता जिसे है वो तेरे अंदर कहीं

प्रश्न कई हैं
उत्तर यही
तू ढूंढता जिसे
है वो तेरे अंदर कहीं

जो दिखता है जैसा
वैसा होता नहीं
जो बदलता है रंग
वो अम्बर नहीं

मंदिर में जा-जा के
रोता है क्यूँ
दीवारों में रहता
वो बंधकर नहीं

बार बार घंटी
बजाता है क्यूँ
ये पोस्ट-आफ़िस
या सरकारी दफ़्तर नहीं

सुनता है वो
तेरी भी सुनेगा
उसे कह कर तो देख
जो पत्थर नहीं

ऐसा नहीं
कि वो देता नहीं
तू लपकेगा कैसे
जो तू तत्पर नहीं

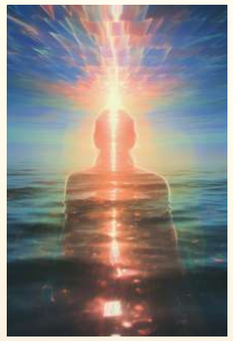

लम्बा सफ़र है
अभी से सम्हल
सम्हलने की उम्र
साठ-सत्तर नहीं

बहता है जीवन
रुकता नहीं
जीवन है नदिया
समंदर नहीं

सूखती है, भरती है
भरती है, सूखती है
एक सा रहता
सदा मंजर नहीं

चलती है धरती
चलते हैं तारें
धड़कन भी रुकती
दम भर नहीं

बढ़ता चला चल
मंज़िल मिलेगी
जीवन का गूढ़
मंतर यही।

शालीन. यस. नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

आवाज

मैं ऐसी आवा ज ढूंढने निकली हूँ,
जो मेरी रूह को कहे जा ए,
मैं ऐसी आवा ज ढूंढने निकली हूँ,
जो सदियों तक गुजती रहे जा ए,
यूँ तो , आवा ज बहुत सी सुनी हैं मैंने,
मगर को ई नहीं जो मेरी मा न की कहे जा ए,
जो मुझे इस दुनिदु या से जो ड़ दे जा ए,
एक आवा ज ऐसी जो सदियों तक गुजती रहे जा ए,
ऐतरा ज़ नहीं मुझे आवा ज से अपनी , मगर क्या करूँ,
अक्सर दगमग जा ती हैं, मेरे हिस्से हो कर भी ,
मुझे ही दगा दे जा ती हैं,
इसलिए मैं सफ़र पर निकली , इसलिए,
मैं ऐसी आवा ज ढूंढने निकली हूँ,
जो मेरी रूह को कहे जा ए,
मैं ऐसी आवा ज ढूंढने निकली हूँ,
जो सदियों तक गुजती रहे जा ए।

आकृति गौतम
एम. बी. ए. (प्रथम वर्ष)

राह से साहिल तक

रात भी है वही चांदनी भी वही ,
जो नही है उसी की कमी खल रही।

है नजारा वही है तबस्सुम वही,
है हवाओ में खुशबू अभी तक वही ॥

है किनारा वही और समंदर वही,
बीच मझदार में नाव मेरी रुकी।

है उजाला अभी अधजले दीपकों क़ा,
क्यों लौ आज़ बुझते हुए जल पड़ी॥

कुछ चरागों तले रौशनी भी दिखी,
पर अंधेरो नें राहो में भटका दिया

था सहारा मुझे भी भंवर में जिन्हे,
उन लहरो नें मुझको उलझा दिया

डूबते डूबते एक सहारा मिला,
एक आयी लहर एक आशा लिऐ

खीच पतवार क़ो , राह पर ला दिया,
एक पल में ही साहिल पे पहुँचा दिया

शालीन यस नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

अनामिका प्रकाश
इ एम बी ए (प्रथम वर्ष)

साक्षी कुमारी
आई पी एम (द्वितीय वर्ष)

साक्षी कुमारी
आई पी एम (द्वितीय वर्ष)

IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

जगती, जम्मू-१८१२२१, भारत
Jagti, Jammu-181221, India
ई-मेल: | E-mail: info@iimj.ac.in
फ़ोन नंबर: | Phone No.: 0191-2741400

cygnusadvertising.in